आर.एन.आई. पंजीयन क्र. 39596/82 (डाक पंजीयन MP/IDC/1462/2016-2019)

साप्ताहिक

मालव अँचल

वर्ष 47 अंक 30 (प्रति रविवार) इंदौर, 14 अप्रैल से 20 अप्रैल 2024 पृष्ठ-8 मूल्य 3 रुपये

पिपरिया की जनसभा में पीएम मोदी की गर्जना

जहां दूसरों की उम्मीदें खत्म वहां से मोदी की गारंटी शुरू

पिपरिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को मध्य प्रदेश के पिपरिया नगर में आयोजित जनसभा को संबोधित करते हुए चुनावी गर्जना की और कांग्रेस नेता राहुल गांधी और विपक्षी दलों पर करारा प्रहार किया। उन्होंने होशंगाबाद संसदीय क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी दर्शन सिंह चौधरी के पक्ष में चुनावी सभा को संबोधित करते हुए कहा कि मोदी की गारंटी वहां से शुरु होती है, जहां से दूसरों की उम्मीदें खत्म हो जाती हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रविवार दोपहर मध्य प्रदेश के नर्मदापुरम जिले के पिपरिया नगर पहुंचे और यहां विशाल जनसभा को संबोधित किया। यहां बतलाते चलें कि पिछले एक हफ्ते के अंदर पीएम मोदी का यह तीसरा मध्य प्रदेश दौरा है। इससे पहले पीएम मोदी ने बीते रविवार संस्कारधानी जबलपुर में एक रोड शो कर चुनाव प्रचार किया था। यहां पिपरिया में पीएम मोदी ने मंच पर नर्मदा मैया की जय के साथ ही अपना संबोधन शुरू किया। जनसभा के दौरान मंच पर छिंदवाड़ा लोकसभा सीट से पार्टी प्रत?याशी विवेक बंटी साहू भी मौजूद थे। सभा में पीएम मोदी ने कहा कि आप इंडिया गठबंधन की स्थिति को देखिये। वो यह भी तय नहीं कर पा रहे कि घोषणापत्र एक जिम्मेवारी होती है, देश की जनता के लिए प्रतिबद्धता होती है। उनकी सरकार क्या करना चाहती है, कैसे करना चाहती है, यह भी उनकी बातों में कहीं दृष्टव्य नहीं होता है। उन्होंने कहा कि उनके घोषणापत्र में एक से बढ़कर एक खतरनाक वादे हैं। उनके एक साथी का घोषणापत्र तो यह भी कहता है कि देश से परमाणु हथियार खत्म कर देंगे। कोई देश ऐसा सोच भी सकता है क्या?... जैसी इनकी घातक सोच, वैसा ही उनका धातक घोषणापत्र है। उन्होंने कहा कि भाजपा का संकल्प पत्र मोदी की गारंटी के रूप में आप सभी के सामने है। गांव हो या शहर, सरकार हर गरीब के पक्के घर का सपना पूरा करेगी। यह मोदी की गारंटी है। होशंगाबाद लोकसभा क्षेत्र के पिपरिया नगर में आयोजित सभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि विधानसभा चुनाव में मप्र ने पूरे देश को चौंकाया था। होशंगाबाद से जो लहर उठी, वो पूरे देश में फैली थी। इसके साथ ही पीएम मोदी ने कांग्रेस और गठबंधन पर निशाना साधते हुए कहा, कि कांग्रेस का शाही परिवार तो धमकी दे रहा कि मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री बना तो देश में आग लग जाएगी। उन्होंने कहा कि बस देश को डराओ, घबराओ और आग फैलाओ। उन्होंने कहहा कि ये लोग 2014 में भी बोल रहे थे, लेकिन कभी आग लगी क्या? ये 2019 में भी बोलते थे, क्या कभी आग लगी? ये राम मंदिर के लिए भी बोल रहे थे, कभी आग लगी क्या? पीएम मोदी ने कहा कि आग देश में नहीं बल्कि उनके दिलों में लगी है।

राहुल गांधी ने बस्तर में भरी हुंकार कहा, जल जंगल जमीन पर आदिवासियों का हक

भाजपा आदिवासियों का अपमान करती है

जगदलपुर। कांग्रेस नेता राहुल गांधी चुनाव - प्रचार के लिए बस्तर पहुंचे उन्होंने बस्तर ब्लॉक के लालबहादुर शास्त्री स्टेडियम में चुनावी सभा को संबोधित करते हुए कांग्रेस प्रत्याशी कवासी लखमा के लिए वोट मांगा साथ ही सभा को संबोधित करते हुए मोदी सरकार पर जमकर निशाना साधते हुए कहा कि हम आपको आदिवासी कहते हैं मोदी आपको वनवासी कहते हैं. हिदुस्तान में जब कोई नहीं था तब आदिवासी यहां वास करते थे, यहां के जल जंगल सब पर उनका हक था. जो आपको वनवासी कहते हैं वो हिदुस्तान का हिस्सा नहीं मानते. हम आपके लिए पेशा कानून लाए, मनरेगा लाए, भाजपा के लोग आरएसएस के लोग आपके विचार भरोसा पर आक्रमण करते हैं, हिंदुस्तान में जंगल कम हो रहा है. यह जंगल जमीन मोदी जी अडानी को पकड़ा रहे हैं. ये चाहते हैं कि आप बड़े शहरों में ना जाए, बड़ी कंपनियों में काम ना करें, लेकिन हम चाहते हैं आप आगे बढ़े.राहुल गांधी ने कहा, मोदी जी कभी समंदर के अंदर घुस जाते हैं पूजा करते हैं. कोविड में थाली बजाओ कहते हैं, जब सांसे नहीं चल रही थी लाशें रखने की जगह नहीं थी, जब थाली से काम नहीं चला तब कहते हैं मोबाइल का टॉर्च जलाओ. जब मजदूर उस वक्त घर वापस जा रहे थे उस वक्त दिल्ली की सरकार ने कोई मदद नहीं की. सारा सुविधा अडानी अंबानी को दे देते हैं. किसी भी राज्य में चले जाओ सब कहते हैं सबसे बड़ा मुद्दा बेरोजगारी और

महंगाई है ढू उन्होंने कहा, राम मंदिर का उदघाटन हुआ. देश के राष्ट्रपति आदिवासी है उनको मना कर दिया कि आप राम मंदिर के उद्घाटन में नहीं आएगी, ये मैसेज पीएम नरेंद्र मोदी ने दिया. भाजपा के लोग आदिवासी के ऊपर पेशाब करते हैं, ये है आदिवासियों की स्थिति, आदिवासियों से उनका जल जंगल छीनना चाहते हैं. भाजपा अपना पूरा धन अडानी अम्बानी को दे दिए. कांग्रेस 5 काम करने जा रही है, बेरोजगारी 30 लाख रिक्त पद है, 30 लाख पद को हमारी सरकार बनते ही आपके हवाले कर देंगे. हम आपके लिए मनरेगा लाये थे जिससे करोड़ों लोगों को लाभ मिला, अब हम अप्रेंटिशिप लाने वाले हैं, जिससे हिंदुस्तान के सभी पढ़े लिखे बेरोजगार युवाओं को एक साल की नौकरी मिलेगी. उनकी ट्रेनिग होगी और उनके खाते में 1 लाख रुपए डाला जाएगा. वो अच्छे काम कर रहे हैं तो उन्हीं संस्था में उनकी नौकरी पक्की होगी.

जब तक सीमाएं सुरक्षित नहीं हो जाती हैं सेनाएं वहीं रहेंगी-जयशंकर

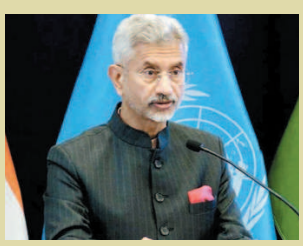

पुणे। भारत और चीन सीमा विवाद नया नहीं है। पहले भी यहां विवाद होते रहे हैं लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व के चलते बहुत कुछ परिवर्तन हुआ है। बुनियादी ढांचे के लिए बजट बढ़ा है जिसके कारण भारत और चीन सीमा को सुरक्षित करने का काम बहुत तेजी से चल रहा है। इसलिए जब तक सीमाएं सुरक्षित नहीं हो जाती तब तक सेनाएं वहीं रहेंगी। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि चीन सीमा पर बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए देश का बजट नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद से लगातार बढ़ा है। जयशंकर ने युवाओं के साथ बातचीत में भारत के वैश्विक उत्थान और बेहतर अवसरों के बारे में चर्चा की। उन्होंने कहा कि चीन के साथ भारत को यथार्थवादी नीति अपनानी चाहिए। यदि हम इतिहास से सबक नहीं लेते हैं तो हम बार-बार गलतियां करेंगे। चीन ने 1950 में तिब्बत पर कब्जा किया और उस समय तत्कालीन गृह मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को पत्र में कहा कि वह चीन के प्रति देश की नीति को लेकर चिंतित हैं।

दुनिया का सबसे मंहगा चुनाव होगा 2024 लोकसभा चुनाव भारत का

नई दिल्ली। 18वीं लोकसभा का चुनाव दुनिया का सबसे महंगा चुनाव हो सकता है। दरअसल अनुमान के मुताबिक इस चुनाव में 1 लाख करोड़ रुपए का खर्च हो सकता है। रिपोर्ट के मुताबिक 2019 में देश में चुनाव का कुल खर्च करीब 60 हजार करोड़ रूपए (8 बिलियन डालर) था और उस समय यह दुनिया का सबसे महंगा चुनाव साबित हुआ था, क्योंकि 2016 में अमरीका में हुए राष्ट्रपति चुनाव में कुल 6.5 बिलियन डालर रुपए खर्च हुए थे लेकिन 2020 के अमरीका के राष्ट्रपति चुनाव में ही अमरीका ने सबसे महंगे चुनाव के मुकाबले भारत को पछाड़ दिया, क्योंकि अमरीका में पिछले राष्ट्रपति चुनाव में 14 बिलियन डालर का खर्च हो गया। अब यदि भारत में 2024 का चुनाव का खर्च 1.16 लाख करोड़ को पार करता है, तब भारत का चुनाव दुनिया का सबसे महंगा चुनाव होगा। इस हिसाब से दुनिया के सबसे महंगे चुनाव के मामले में भारत-अमरीका में ही मुकाबला है।

देश में 2019 के चुनाव में हुए कुल खर्च में चुनाव आयोग के खर्च के अलावा, राजनीतिक दलों, चुनाव में खड़े उम्मीदवारों के खर्च के अलावा अन्य प्रकार का खर्च भी शामिल है। इसमें से 24 हजार करोड़ रुपए (40 फीसदी) खर्च उम्मीदवारों ने खुद किया था जबकि राजनीतिक दलों ने 20 हजार करोड़ रुपए (35 प्रतिशत), सरकार और चुनाव आयोग ने करीब 10 हजार करोड़ रूपए (15 प्रतिशत) मीडिया सपांसर 3 हजार करोड़ रुपए (5 प्रतिशत) और अन्य प्रकार के औद्योगिक खर्चों पर 3 हजार करोड़ रुपए (5 प्रतिशत) खर्च हुआ था। बात दें कि इतना खर्च तब हुआ था जब चुनाव में उम्मीदवारों के खर्च की सीमा 70 लाख थी, यह खर्च की सीमा 2022 में बढ़ा कर 95 लाख रुपए की गई है और इसी में ही 35 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इस लिहाज से इस चुनाव में उम्मीदवारों का खर्च ही 35 प्रतिशत बढ़ेगा यानी उम्मीदवारों का 24 हजार करोड़ रुपए का खर्च ही 32 हजार करोड़ रुपए पहुंच सकता है। पिछले 26 साल में देश में लोकसभा के छह चुनाव हुए हैं और इस बीच चुनाव का खर्च 9000 करोड़ रुपए से बढ़ कर 60 हजार करोड़ रुपए हो गया है। 1998 के चुनाव में यह खर्च 9000 करोड़ रुपए था जबकि 2019 में यह खर्च 60 हजार करोड़ रुपए हुआ। 1998 में भाजपा ने चुनाव पर करीब 20 प्रतिशत खर्च किया था जबकि 2019 में भाजपा का खर्च बढ़ कर 45 प्रतिशत हो गया। इसी प्रकार 2009 में कांग्रेस ने कुल खर्च का 40 प्रतिशत खर्च किया था जबकि 2019 में यह कम हो कर 10-15 प्रतिशत हो गया।

संपादकीय

शांतिपूर्ण धरना भी अब अपराध की श्रेणी में?

भारत में शांतिपूर्ण धरना प्रदर्शन करना भी अपराध की श्रेणी में आ गया है? धरना प्रदर्शन के लिए यदि अनुमति मांगी जाती है। जिला और पुलिस प्रशासन आमतौर पर कानून व्यवस्था की स्थिति के नाम पर विरोध प्रदर्शन की अनुमति नहीं देता है। यदि दबाव में अनुमति दे भी दी, तो उसमें इस तरह की शर्तें लगा दी जाती हैं। जिसका पालन आयोजक के वश में ही नहीं रहता है। यदि प्रदर्शन सरकार और प्रशासन के खिलाफ हो रहा है। ऐसी स्थिति में प्रदर्शन करने की आमतौर पर अब अनुमति नहीं मिलती है। जिला प्रशासन द्वारा धारा 144 का उपयोग धरना प्रदर्शन को रोकने में अब बड़े पैमाने पर किया जाने लगा है। धारा 144 लगाकर विरोध प्रदर्शन करने की अनुमति नहीं दी जा रही है। जो भारतीय नागरिकों के मूलभूत अधिकार को खत्म करने जैसा है। इसी तरह से पुलिस लोगों को गिरफ्तार कर लेती है। उन्हें गिरफ्तारी का कारण नहीं बताया जाता है। पुलिस द्वारा गिरफ्तारी का कारण पूछने पर उस पर सरकारी काम में अवरोध पैदा करने, तरह-तरह के आरोप लगाकर, पुलिस द्वारा एफ़आईआर दर्ज कर लेती है। कई मामलों में तो यह भी देखने में आया है। पुलिस बिना सूचना दिए चार्ज शीट अदालत में पेश कर देती है। धरना प्रदर्शन के मामलों में फरार घोषित कर दिया जाता है। न्यायालयों में कई वर्षों तक मुकदमा लंबित रहता है। कई वर्षों तक लोगों को न्यायालय के चक्कर लगाने पड़ते हैं। हाल ही में चुनाव आयोग के सामने शांतिपूर्वक धरना दे रहे टीएमसी के सांसद डेरेक ओ ब्रायन और लगभग एक दर्जन लोगों को दिल्ली पुलिस ने गिरफ्तार किया। दिल्ली पुलिस उन्हें घसीट कर बस तक ले गई। पुलिस उन्हें यह भी नहीं बता रही थी, दिल्ली पुलिस उन्हें क्यों हिरासत में ले रही है। वह अपनी बात रखने के लिए चुनाव आयोग के कार्यालय में आए थे। वह धरना देकर शांति पूर्वक विरोध दर्ज करा रहे थे। सांसद डेरेक का कहना था,दिल्ली पुलिस द्वारा उन्हें नौवीं बार हिरासत में लिया गया है। हम लोग शांतिपूर्ण ढंग से बैठे हुए थे। मीडिया से बात कर रहे थे। इसी बीच पुलिस आई और अपराधियों की तरह घसीट कर ले गई। यह सब कैमरे के सामने हो रहा था। इसके बाद भी पुलिस को कोई फर्क नहीं पड़ा। पुलिस गिरफ्तार करके उन्हें बसों से मंदिर मार्ग पुलिस स्टेशन के बाहर उन्हें काफी देर तक रखा। उसके बाद 2 घंटे तक वह बस में हम लोगों को घुमाते रहे। कहां ले जा रहे हैं, और किस अपराध में हिरासत में लिया है। यह भी पुलिस द्वारा नहीं बताया गया। लगभग 2 घंटे अवैध हिरासत में रखने के बाद उन्हें छोड़ दिया गया। सांसदों के साथ ऐसा व्यवहार किए जाने पर उन्होंने एतराज जताते हुए कहा, कानून के अनुसार सीआरपीसी की धारा 500(1) के तहत हिरासत में लिए जाने वाले व्यक्ति को गिरफ्तारी का कारण बताया जाना जरूरी होता है। लगभग 2 घंटे तक किसी को कुछ भी नहीं बताया गया। निकटतम पुलिस स्टेशन पर भी नहीं ले जाया गया। घंटो बस में घुमाने के बाद छोड़ दिया गया। भारत में कानून तो बना दिए जाते हैं। लेकिन कानून का पालन वही लोग नहीं करते हैं, जिनके ऊपर कानून के पालन कराने की जिम्मेदारी होती है। पिछले कुछ वर्षों में जिस तरह से धरना और प्रदर्शन की अनुमति देने में जिला प्रशासन और पुलिस प्रशासन अड़ंगेबाजी लगता है। तरह-तरह की ऐसी शर्तें लाद देता है। जिनका पालन करना आयोजक के लिए संभव ही नहीं होता है। जिला प्रशासन को ऐसा लगता है, कि धरना प्रदर्शन नहीं होना चाहिए। ऐसी स्थिति में धारा 144 का दुरुपयोग बड़े पैमाने पर होने लगा है। शांतिपूर्ण प्रदर्शन के दौरान पुलिस की बर्बरता भी बड़ी आम हो गई है। जब पुलिस और जिला प्रशासन ही नियमों का पालन नहीं करते हैं। तब स्थिति और भी विकट हो जाती है। किसान आंदोलन के दौरान हरियाणा की पुलिस ने जिस तरह की बर्बरता किसानों के ऊपर की है। उसे सारे देश ने देखा है। शांतिपूर्ण प्रदर्शनों को किस तरह से रोका जाता है। किसानों के ऊपर जिस तरह से अश्रु गैस के गोले छोड़े गए। किसानों को रोकने के लिए जिस तरीके के अवरोध लगाए गए। दिल्ली प्रदर्शन के लिए जाने वाले किसानों को हरियाणा में ही रोक लिया गया। यह भी सारे देश ने देखा है। किसी भी लोकतांत्रिक देश में जहां मानव अधिकार और कानून का राज है। उन नियमों-कानूनों को तोड़ने का काम यदि पुलिस करने लगती है। इससे स्थिति खराब होती है। सीबीआई और ईड़ी जैसी जांच एजेंसियों के ऊपर भी इसी तरीके के आरोप लगने लगे हैं। गिरफ्तारी के बाद भी कई दिनों तक अवैध रूप से हिरासत में रखने के कई मामले सामने आ चुके हैं। कई दिनों बाद गिरफ्तारी बताने के बाद कोर्ट में पेश किया जाता है। पीएमएलए कानून, जो ड्रग माफिया और आतंकवादियों के लिए बनाया गया था।

चुनाव में व्यक्ति नहीं, मूल्यों की स्थापना का दौर चले

ललित गर्ग

लोकसभा चुनावों की सरगर्मियां उग्र से उग्रतर होती जा रही है, पहली बार भ्रष्टाचार चुनावी मुद्दा बन रहा है, कुछ भ्रष्टाचार मिटाने की बात कर रहे हैं तो कुछ भ्रष्टाचारियों को बचाने की बात कर रहे हैं। मुसलमान वोटों की राजनीति करने वाले दल अपने घोषणा पत्रों में उनके कल्याण की कोई बात ही नहीं कर रहे हैं, मुसलमानों का सशक्तीकरण करने की बचाय उनके तुष्टीकरण को प्राथमिकता दी जा रही है। कुछ दल देश-विकास की बात कर रहे हैं तो कुछ दल विकास योजनाओं की छिछालेदार कर रहे हैं। किसी भी दल के चुनावी मुद्दे में पर्यावरण विकास की बात नहीं हैं। व्यक्ति नहीं, मूल्यों की स्थापना के स्वर कहीं भी सुनाई नहीं दे रहे हैं। सत्ता और स्वार्थ ने अपनी आकांक्षी योजनाओं को पूर्णता देने में नैतिक कायरता दिखाई है। केजरीवाल जेल से सरकार चलाने की बात करके नैतिक एवं राजनीतिक मूल्यों के आन्दोलन से सरकार बनाने के सच को ही बदनुमा बना दिया है। इसकी वजह से लोगों में विश्वास इस कदर उठ गया कि चौराहे पर खड़े आदमी को सही रास्ता दिखाने वाला भी झूठा-सा लगता है। आंखें उस चेहरे पर सचाई की साक्षी ढूंढती हैं। समस्याओं से लड़ने के लिये हमारी तैयारी पूरे मन से होनी चाहिए।

लोकतंत्र के महापर्व पर समझना चाहिए कि हमने जीने का सही अर्थ ही खो दिया है। यद्यपि बहुत कुछ उपलब्ध हुआ है। कितने ही नए रास्ते बने हैं। फिर भी किन्हीं दृष्टियों से हम भटक रहे हैं। भौतिक समृद्धि बटोरकर भी न जाने कितनी रिक्तताओं की पीड़ा सही है। गरीब अभाव से तड़पा है, अमीर अतृप्ति से। कहीं अतिभाव, कहीं अभाव। जीवन-वैषम्य कहां बांट पाया अपनों के बीच अपनापन। अट्टालिकाएं खड़ी हो रही हैं, बस्तियां बस रही हैं मगर आदमी उजड़ता जा रहा है। पूरे देश में मानवीय मूल्यों का ह्रास, राजनीति अपराध, भ्रष्टाचार, कालेधन की गर्मी, लोकतांत्रिक मूल्यों का हनन, अन्याय, शोषण, संग्रह, झूठ, चोरी जैसे-अनैतिक अपराध पनपे हैं। धर्म, जाति, राजनीति-सत्ता और प्रांत के नाम पर नए संदर्भों में समस्याओं ने पंख फैलाये हैं। हर बार के चुनावों की तरह इस बार भी आप, हम सभी अपने आपको जीवन से जुड़ी अंतहीन समस्याओं के कटघरे में खड़ा पा रहे हैं। कहा नहीं जा सकता कि जनता की अदालत में कहां, कौन दोषी है? पर यह चिंतनीय प्रश्न अवश्य है हम इतने उदासीन एवं लापरवाह कैसे हो गये कि राजनीति को इतना आपराधिक होने दिया? जब आपके द्वार की सीढ़ियां मैली हैं तो अपने पड़ौसी की छत पर गन्दगी का उलाहना मत दीजिए। कोई भी अच्छी शुरूआत सबसे पहले स्वयं की की जानी जरूरी है।

देश के लोकतंत्र को हांकने वाले लोग इतने बदहवास होकर निर्लज्जतापूर्ण कारनामे करेंगे, इसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। चौराहे पर खड़ा आदमी सब कुछ देख रहा है। उसे कुछ सूझ नहीं रहा कि वह कौन सी राह पकड़े। आम आदमी सरकार ने शराब-शिक्षा में घोटाले किए, दागी चिन्हित भी हुए लेकिन आप सरकार ने भ्रष्टाचार को लेकर दोहरे मापदंड अपना लिए। अपनों द्वारा किया गया भ्रष्टाचार कोई भ्रष्टाचार नहीं, राबर्ट वाड्रा के खिलाफ कुछ नजर नहीं आता और वे चुनाव लड़ने की बात करते हैं। बात केवल कांग्रेस की ही नहीं है, बात राजनीतिक आदर्शों की हैं। जिसकी वकालत करते हुए कभी अन्ना हजारे तो कभी बाबा रामदेव, कभी केजरीवाल तो कभी श्री रविशंकरजी जन-आन्दोलन की अगवाई करते देते थे, अब ना तो ऐसे आन्दोलन होते हैं न ही उन पर विश्वास रहा। हमारे भीतर नीति और निष्ठा के साथ गहरी जागृति की जरूरत है। नीतियां सिर्फ शब्दों में हो और निष्ठा पर संदेह की परतें पड़ने लगें तो भला उपलब्धियों का आंकड़ा वजनदार कैसे होगा? बिना जागती आंखों के सुरक्षा की साक्षी भी कैसी! एक वफादार चौकीदार अच्छा सपना देखने पर भी इसलिए मालिक द्वारा तत्काल हटा दिया जाता है कि पहरेदारी में सपनों का खयाल चोरी को खुला आमंत्रण है। भाजपा जो हमेशा राजनीतिक शुचिता की बात करती रही, उसकी शुचिता कहां है? कितने दागी एवं अपराधी नेताओं को उसने अपने दल में जगह ही नहीं दी, टिकट तक दे दिया। हो सकता है 400 के बड़े लक्ष्य को हासिल करने के लिये भाजपा की कुछ मजबूरियां हो। कमल तो खिलेगा ही, लेकिन उस खिलाहट में मजबूरियों के नाम पर मूल्यों के साथ समझौता नहीं होता तो यह लोकतंत्र को स्वस्थ बनाने का एक अनूठा उदाहरण होता। श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कभी कहा था कि व्यक्ति को अपने जन्म से नहीं बल्कि कर्म से पहचाना जाना चाहिए, यह वाक्य उनके पोते राहुल गांधी पर भी लागू हो रहा है। वे तमाम सुखों एवं सुविधाओं में पले-बढ़े और उन्होंने जीवन में कोई संघर्ष नहीं किया या ये कहें कि जीवन के लिए संघर्ष करने की उनके सामने कोई नौबत नहीं आई। कहते हैं - ÷जा के पैर न परी बिवाई, वो क्या जाने पीर पराई÷। जब आप लोगों की पीड़ा को उसी भाव से महसूस नहीं कर पाते तो दूसरों को आपकी बात पर भरोसा नहीं हो पाता। इस भरोसे को पाने के लिए उस पीड़ा को पहले खुद भुगतना होता है। यही वजह है कि राहुल गांधी सच्ची और ठीक बात कहते हैं तब भी लोग उसे उस सच्चाई के साथ, उस भाव में अंगीकार नहीं कर पाते। लोकतंत्र में राजनीतिक दलों का मौजूदा यह आचरण स्वीकार्य नहीं। पूरा राजनीतिक वातावरण ही हास्यास्पद हो चुका है। यदि हालात नहीं सुधरे तो राजनीतिक दलों की दुर्गति तय है। बदलती राजनीतिक सोच एवं व्यवस्था के मंच पर बिखरते मानवीय मूल्यों के बीच अपने आदर्शों को, उद्देश्यों को, सिद्धांतों को, परम्पराओं को और जीवनशैली को हम कोई ऐसा रंग न दे दें कि उससे उभरने वाली आकृतियां हमारी भावी पीढ़ी को सही रास्ता न दिखा सकें।

राजनीति का वह युग बीत चुका जब राजनीतिज्ञ आदर्शों पर चलते थे। आज हम राजनीतिक दलों की विभीषिका और उसकी अतियों से ग्रस्त होकर राष्ट्र के मूल्यों को भूल गए हैं। भारतीय राजनीति उथल-पुथल के दौर से गुजर रही है। चारों ओर भ्रम और मायाजाल का वातावरण है। भ्रष्टाचार और घोटालों के शोर और किस्म-किस्म के आरोपों के बीच देश ने अपनी नैतिक एवं चारित्रिक गरिमा को खोया है। मुद्दों की जगह अभद्र टिप्पणियों ने ली है। व्यक्तिगत रूप से छींटाकशी की जा रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पाठशाला के प्रधानाचार्य की तरह अपने दल के कार्यकर्ताओं को पाठ पढ़ाया कि वह झूठे एवं बेबुनियाद आरोपों की परवाह किए बिना तेजी से काम करें। जबकि विपक्षी दलों की सारी की सारी कवायद में एक अनर्थ सच्चाई के ही दर्शन हुए क्योंकि जैसे केवल चेहरे बदलने से दामन के दाग नहीं धुल जाते, वैसे ही कुछ युवा चेहरों को सामने खड़ा करने से क्रांतिकारी सोच पैदा नहीं की जा सकती। भ्रष्टाचार के मुद्दे को व्यक्तिगत आरोपों की झड़ी लगाकर पृष्ठभूमि में डालने की कोशिश की जा रही है।

कई राजनीतिक दल तो पारिवारिक उत्थान और उन्नयन के लिये व्यावसायिक संगठन बन चुके हैं। सामाजिक एकता की बात कौन करता है। आज देश में भारतीय कोई नहीं नजर आ रहा क्योंकि उत्तर भारतीय, दक्षिण भारतीय, महाराष्ट्रीयन, पंजाबी, तमिल की पहचान भारतीयता पर हावी हो चुकी है। वोट बैंक की राजनीति ने सामाजिक व्यवस्था को क्षत-विक्षत करके रख दिया है। ऐसा लगता है कि सब चोर एक साथ शोर मचा रहे हैं और देश की जनता बोर हो चुकी हैं। हमें अतीत की भूलों को सुधारना और भविष्य के निर्माण में सावधानी से आगे कदमों को बढ़ाना। वर्तमान के हाथों में जीवन की संपूर्ण जिम्मेदारियां थमी हुई हैं। हो सकता है कि हम परिस्थितियों को न बदल सकें पर उनके प्रति अपना रूख बदलकर नया रास्ता तो अवश्य खोज सकते हैं। आने वाले नये राजनीतिक नेतृत्व का सबसे बड़ा संकल्प यही हो कि राष्ट्रहित में स्वार्थों से ऊपर उठकर काम करेंगे। राष्ट्र सर्वोपरि है और राष्ट्र सर्वोपरि रहेगा। व्यक्ति का क्या मूल और क्या विसात। विरोध नीतिगत होना चाहिए व्यक्तिगत नहीं। एक उन्नत एवं विकासशील भारत का निर्माण करने के लिये हमें व्यक्ति नहीं, मूल्यों एवं सिद्धान्तों को शक्तिशाली बनाना होगा।

बाल व्यक्तित्व विकास शिविर में बच्चों ने सीखा वेस्ट से बेस्ट बनाना

इंदौर। *समाज सेवा प्रकोष्ठ द्वारा प्रेस कॉम्पेक्स स्थित सभागार में चार दिवसीय 121 वे निशुल्क बाल व्यक्तित्व विकास शिविर के दूसरे दिन पूर्व वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी सर्व सी बी सिंह, रामेश्वर गुप्ता, पूर्व एस पी राजेश जायसवाल ने शिविरार्थी बच्चों को जीवन मेंसफलता के सूत्र सिखाए।*

सी बी सिंह ने कहा कि बच्चे अपने समग्र विकास के लिए खूब अखबार पढ़ें, जानकारी एवं ज्ञानपूर्ण टीवी चैनल देखें, क्विज देखें। इससे उनका सामान्य ज्ञान बढ़ेगा जो जीवन और प्रतियोगिताओं में आगे रहने के लिए बहुत जरूरी है। वरिष्ठ शिक्षाविद् रंजना नाइक ने व्यक्तित्व विकास पर बात करते हुए विवेकानंद के कथन का उल्लेख करते हुए कहा कि व्यक्तित्व विकास के लिए सबसे पहले अपना लक्ष्य निर्धारित करके मेहनत, लगन से उसे प्राप्त करने में जुट जाना चाहिए। अच्छी सेहत, अच्छे आचरण, अच्छी आदतों के लिए हमेशा अच्छी संगत में रहना चाहिए। चरित्र से बढ़कर कुछ नहीं होता,इसका सदैव ध्यान रखें। किसी से तुलना न करें जो कुछ हमें मिला है उसे और बेहतर बनाएं। इससे पूर्व सुश्री भारती थट्टे ने वेस्ट से बेस्ट की क्राफ्ट कला के तहत कैरी बैग के कपड़ों से सुंदर फूल पत्तियां, गुलदस्ता आदि बनाना सिखाया। सुश्री स्मिता बिरारी ने सुर, सरगम, तीन ताल की जानकारी देते हुए गायन का अभ्यास कराया। योगाचार्य श्री बाला चैतन्य तथा सुश्री आरती द्विवेदी ने ताड़ासन,प्राणिक क्रिया, योगमुद्रा, वज्रासन जैसे योगासन और कुछ हास्यासन कराए।

बच्चों के बीच सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता भी संचालित की गईं। श्रेष्ठ चित्रों को पुरुस्कार प्रदान किए जाएंगे।

शिविर में अतिथियों का स्वागत सर्वश्री आलोक खरे, संस्था सचिव श्री सुबोध भोरासकर, श्याम पांडेय,अशोक कापडनिस, सुमित्रा डिसूजा, माया ढोने, सुरेश रायकवार आदि ने किया। सत्र संचालन श्री ब्रजेश कानूनगो ने तथा आभार प्रदर्शन श्री श्याम पांडेय ने किया।

हाई कोर्ट ने तीन विधायकों वर्मा, सिंघार और भीमावत को चुनाव याचिकाओं पर दिए नोटिस

इंदौर। संभाग के तीन विधायकों को हाई कोर्ट ने शुक्रवार को चुनाव याचिकाओं पर नोटिस जारी किए हैं। तीन अलग-अलग जजेस के समक्ष चुनाव याचिकाओं पर सुनवाई हुई। सबसे दिलचस्प तथ्य धार विधायक नीना वर्मा से जुड़ा है। वह चार बार चुनाव जीत चुकी हैं और हर बार उनके निर्वाचन को हाई कोर्ट में चुनौती दी गई और उन्हें नोटिस जारी हुआ है। एक बार हाई कोर्ट ने निर्वाचन शून्य भी घोषित कर दिया था। इस बार उनके निर्वाचन को सुरेश भंडारी ने चुनौती दी है। भंडारी ने कोर्ट के समक्ष खुद पैरवी की। नेता प्रतिपक्ष व गंधवानी विधायक उमंग सिंघार को जस्टिस विजय कुमार शुक्ला की खंडपीठ ने नोटिस जारी किए हैं। पराजित प्रत्याशी सरदार सिंह मेढा ने उनके खिलाफ याचिका दायर की है। उन पर शराब बांटना, वोट के लिए लालच देना, संपत्ति की जानकारी छुपाना सहित कई आरोप लगाए गए हैं। वहीं, मात्र 59 वोट से चुनाव हारे शाजापुर के हुकुमसिंह कराड़ा ने भाजपा के विधायक अरुण भीमावत की जीत को चुनौती दी है। जस्टिस प्रणय वर्मा की खंडपीठ ने सुनवाई के बाद नोटिस जारी किए हैं।

बे-मौसम बारिश ही खोल रही बिजली कंपनी के मेंटेनेंस की पोल

इंदौर। बे-मौसम हो रही बारिश ही बिजली कंपनी के करोड़ों रुपए के मेंटेनेंस की पोल खोल रही है। शुक्रवार रात करीब 8 मात्र चंद मिनट के लिए गरज-चमक के साथ बारिश हुई। जैसे ही बारिश शुरू हुई वैसे ही शहर भर की बिजली गुल हो गई। न केवल लोगों को घरों में परेशानी का सामना करना पड़ा वरन् सड़कों पर चल रहे वाहन चालकों को भी दोहरी परेशानी का सामना करना पड़ा। एक तरफ तो अंधेरा सड़कों पर सिर्फ हेडलाइट की रोशनी में गाड़ी चलाना पड़ी वहीं दूसरी ओर सड़कों पर भरे पानी से होने वाली समस्याओं से भी बचना पड़ा।

जानकारी अनुसार हर वर्ष बारिश के पहले और लगभग पूरे रुपए के मेंटेनेंस का दावा करती है। हालांकि जैसे ही बारिश होती है चाहे चंद मिनट की ही बारिश हो बिजली कंपनी के करोड़ों रुपए के मेंटेनेंस की पोल खोल दी। शुक्रवार शाम को भी ऐसा ही देखने को मिला। करीब 10 से 15 मिनट हुई बारिश में ही बारिश शुरू होते ही शहर भर की बत्ती गुल हो गई। लोग बिजली कंपनी के कंट्रोल रूम और झोनल कार्यालयों पर फोन घनघनाते रहे, लेकिन कहीं से भी रिस्पांस नहीं मिला। क्या यही बिजली कंपनी का करोड़ों रुपए का मेंटेनेंस है या लोकधन के इन करोड़ों रुपए को बर्बाद करने के लिए सिर्फ बहाना बनाया जाता है।

वकीलों को तीन माह के लिए काले कोट से छूट

इंदौर। राज्य अधिवक्ता परिषद जबलपुर द्वारा 15 अप्रैल से 15 जुलाई तक अधिवक्ताओं को काले कोट पहनने से छूट दी है। अधिवक्ता सफेद शर्ट, काला-सफेद, धारीदार या ग्रे कलर का पेंट पहनकर और एडवोकेट बेंड बांधकर न्यायालयों में पैरवी कर सकेंगे। इन्दौर अभिभाषक संघ के पूर्व-अध्यक्ष गोपाल कचोलिया ने बताया, कि मध्यप्रदेश राज्य अधिवक्ता परिषद जबलपुर द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार, मध्यप्रदेश के सभी जिला न्यायालयों में सभी अभिभाषकगण बिना काला कोट पहने पैरवी कर सकते हैं। भीषण गर्मी को देखते हुए स्टेट बार काउंसिल ने प्रदेशभर के वकीलों को तीन माह के लिए काले कोट से छूट देने का फैसला लिया है।

हाईकोर्ट व सुप्रीम कोर्ट में पैरवी के वक्त छूट नहीं

कचोलिया ने बताया, कि इस दौरान वकीलों को सफेद शर्ट व काला, सफेद, धारी या ग्रे कलर का पेंट पहनकर और एडवोकेट बेंड बांधकर जिला न्यायालयों और उनके अधीनस्थ न्यायालयों में पैरवी करना होगी। अलबत्ता हाईकोर्ट व सुप्रीम कोर्ट में पैरवी के वक्त उन्हें यह छूट/राहत नहीं मिलेंगी। कचोलिया ने बताया कि प्रदेश के कई तहसीलों व जिलों में यह हालात है कि बैठने की जगह की तुलना में वकीलों की तादाद काफी ज्यादा है। ऐसे में उन्हें खुले में बैठना पड़ता है या तंग जगह में काम करना पड़ता है। खासकर बिजली गुल हो जाने की दशा में उनकी परेशानी और ज्यादा बढ़ जाती है। काउंसिल के इस निर्णय से प्रदेश के करीब एक लाख वकीलों को फायदा पहुंचेंगा।

झोन 15 के सामने ही फैली कचरा गंदगी, झेडओ का ही नहीं ध्यान

स्वच्छता में नंबर-1 निगम के अधिकारियों का अब सफाई में नही दिलचस्पी

इंदौर।स्वच्छता में लगातार सात बार से नंबर वन नगर निगम इंदौर के अधिकारियों का ध्यान आप स्वच्छता की ओर नहीं है। इसका जीवंत उदाहरण नगर निगम के पश्चिम क्षेत्र स्थित झोन क्रमांक 15 के सामने देखने को मिलता है। जोनल कार्यालय के सामने ही जब इस प्रकार कचरा गंदगी कई दिनों से पड़ी है तो बाकी क्षेत्र का क्या आलम होगा यह भी समझा जा सकता है। इससे न केवल नगर निगम के अधिकारियों की लापरवाही भरी कार्यशैली के बारे में पता चलता है, बल्कि अपनी जिम्मेदारियां के प्रति सजगता का भी प्रमाण मिल जाता है। बताया तो यहां तक जा रहा है कि यहां कचरा करीब 15 दिनों तक पड़ा रहता है।

जानकारी अनुसार झोन क्रमांक 15 के अधिकारियों का लापरवाही भरा काम हर समय सामने आता रहता है। अब तो इसका प्रमाण भी मिलने लगा

है। यह भी देखकर समझ जा सकता है कि जब झोनल कार्यालय के सामने ही इस प्रकार कई दिनों से कचरा फैला पड़ा है तो जॉन क्षेत्र के ही अन्य वार्डो का भी क्या हाल होगा। समाजवादी इंदिरा नगर ऊषा नगर और भी कई ऐसी कालोनियां हैं, जहां सड़क किनारे कचरे के ढेर देखे जा सकते हैं। जब झोनल कार्यालय के सामने ही इस प्रकार थोड़ा बहुत नहीं ढेरों कचरा पड़ा हो तो यह भी समझा जा सकता है कि झोनल कार्यालय पर पदस्थ अधिकारी कितनी लापरवाही और अनदेखी करते होंगे।

झोनल अधिकारी भी नहीं देते ध्यान-इस प्रकार झोनल कार्यालय के सामने ही कचरा फैला देख एक सवाल यह भी उठना है कि क्या झोन क्रमांक 15 पर पदस्थ झोनल अधिकारी (झेडओ) का भी ध्यान इस और नहीं जाता या वे देखकर भी इसे अनदेखा कर देते हैं और अपनी जिम्मेदारियों से मुंह मोड़ लेते हैं।

बीओ पर भी लापरवाही हावी, नहीं होती इन पर कोई कार्रवाई

झोन क्रमांक 15 के बीओ सुधीर गलवे पर भी लापरवाही का आलम हावी है। अव्वल तो बीओ गुलवे झोनल कार्यालय द्रविड़ नगर में कभी मिलते ही नहीं और दूसरा यह है कि हाल ही में इसी झोनल कार्यालय के उषा नगर स्थित क्षेत्र में 15 बाय 50 के प्लाट पर एक अवैध बेसमेंट बना लिया गया। इसकी शिकायत होने के बावजूद भी गुलवे ने कोई कार्रवाई नहीं की। जब बिल्डिंग गिर गई तो हाथों-हाथ नोटिस थमा कर अपनी जिम्मेदारी की इतिश्री कर ली। अब बीओ गुलवे यह बताएंगे कि 15 बाय 50 के प्लाट पर अवैध बेसमेंट का निर्माण कैसे हो गया।

छिंदवाड़ा 73 सालों से कांग्रेस का दबदबा

कमलनाथ का किला फतह करने की कवायद में भाजपा

भोपाल। *मध्य प्रदेश में लोकसभा चुनाव 2024 की बिसात बिछ चुकी है। 6 सीटों पर 19 अप्रैल को पहले चरण का चुनाव होगा। जिसमें प्रदेश की सबसे हॉट सीट छिंदवाड़ा भी शामिल है और भाजपा की एमपी की सभी 29 लोकसभा सीट जीतने के दावे में सबसे बड़ा रोड़ा छिंदवाड़ा सीट है। जिसको लेकर भाजपा के दिग्गज नेताओं ने अपनी एड़ी चोटी का जोर लगा दिया है।*

कांग्रेस के कमलनाथ 9 बार सांसद रहे और उनके बाद बेटे नकुलनाथ यहां से सांसद हैं लेकिन इस बार भाजपा ने छिंदवाड़ा सीट को नाक का सवाल बना लिया है। कांग्रेस ने फिर नकुलनाथ को टिकट दिया है तो वहीं दूसरी तरफ कांग्रेस के इस मजबूत गढ़ में भाजपा ने विवेक बंटी साहू को मैदान में उतारा है। लोकसभा का टिकट बंटी साहू को भले ही पहली

बार मिला हो, लेकिन बंटी साहू छिंदवाड़ा से दो बार विधानसभा का चुनाव लड़ चुके हैं। दोनों ही चुनाव में कमलनाथ को कड़ी चुनौती दी थी।

सिर्फ एक बार भाजपा ने जीता था चुनाव-छिंदवाड़ा लोकसभा सीट आजादी के बाद से अभी तक एक बार के अपवाद के अलावा हमेशा कांग्रेस का गढ़ रही है। आजादी के बाद से अभी तक हुए कुल 19 लोकसभा चुनाव में केवल 1997 के लोकसभा चुनाव में यहां पर भाजपा की सुंदरलाल पटवा ने जीत हासिल की थी, इसके अतिरिक्त 18 बार से यहां पर कांग्रेस का ही कब्जा है। 1980 से कमलनाथ यहां से लड़ रहे चुनाव-1980 से कांग्रेस के कद्दावर नेता कमलनाथ यहां से चुनाव लड़ रहे हैं। कमलनाथ यहां से 9 बार सांसद रहे हैं। इसके अलावा एक बार उनकी पत्नी अलका नाथ और एक बार पुत्र नकुलनाथ भी सांसद रह चुके हैं। इस बार चुनाव में उनके पुत्र नकुलनाथ दोबारा मैदान में है। कमलनाथ अभी तक सिर्फ एक चुनाव सुंदरलाल पटवा से हारे हैं।

शहरी क्षेत्र में केवल 25 प्रतिशत वोटर-छिंदवाड़ा लोकसभा में सात विधानसभा क्षेत्र आते हैं। जिसमें कुल 16 लाख 19 हजार 101 वोटर है इस लोकसभा क्षेत्र का 75 प्रतिशत हिस्सा ग्रामीण है। केवल 25 प्रतिशत वोटर ही शहरी क्षेत्र में रहते हैं। जिनमें से 818257 पुरुष एवं आठ लाख 826 महिला वोटर हैं। छिंदवाड़ा जिले में ओबीसी और एसटी मतदाता दोनों ही 36-36 प्रतिशत हैं एवं 11 फीसदी वोटर अनुसूचित जाति के हैं।

497 बूथ भाजपा कभी नहीं जीती-जिले में कल 1934 पोलिंग बूथ में से 497 बूथ ऐसे हैं, जहां पिछले पांच चुनाव में भाजपा कभी नहीं जीती है। वहीं पर 250 बूथ हैं जिन पर भाजपा कभी नहीं हारी। 2019 की लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को 47.70 फीसदी वोट मिले थे एवं भाजपा को 45.009 प्रतिशत वोट मिले थे।

दो विधानसभा चुनाव में सातों सीटों पर जीती कांग्रेस-पिछले दो विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने सातों विधानसभा सीट में जीत हासिल की थी। वर्तमान में इस लोकसभा के सातों विधायक कांग्रेस से जीतकर आए थे, जिसमें से एक विधायक कमलेश शाह ने भाजपा ज्वाइन कर ली। जो की अमरवाड़ा विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस की टिकट पर जीते थे।

कमलनाथ के करीबी विधायक भाजपा में शामिल-वर्तमान में छिंदवाड़ा में कांग्रेस से बड़ी संख्या में कांग्रेसी नेताओं और कार्यकर्ताओं का भाजपा में जाने का सिलसिला चल रहा है। कांग्रेस छोड़कर जाने वालों में सबसे प्रमुख नाम पूर्व कैबिनेट मंत्री दीपक सक्सेना, छिंदवाड़ा के महापौर विक्रम आहके, अमरवाड़ा विधायक कमलेश शाह, पूर्व विधायक चौधरी गंभीर सिंह, अज्जू ठाकुर आदि हैं। इसके अलावा कई पार्षद एवं सभापति के साथ जनपद सदस्य भी कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल हो गए हैं।

एसआइटी को नहीं मिली रिमांड, सेंट्रल जेल पहुंचा पूर्व कुलगुरु

भोपाल। राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (आरजीपीवी) में 19.48 करोड़ की आर्थिक अनियमितता में फरार पूर्व कुलगुरु प्रो. सुनील कुमार गुप्ता की गिरफ्तारी के बाद शुक्रवार को कोर्ट ने न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया। विशेष न्यायाधीश संकर्षण प्रसाद पांडेय की कोर्ट में एसआईटी ने पुलिस रिमांड मांगी, लेकिन तर्कसंगत बात नहीं रख सकी। कोई दस्तावेज भी पेश नहीं कर सकी। तीन मार्च को कुलगुरु पर केस दर्ज होने के 39वें दिन उसे सेंट्रल जेल भेज दिया।

एसआईटी ने आरजीपीवी से मूल नस्ती, मोबाइल और बैंक का रिकॉर्ड जब्त करने के लिए गुप्ता की रिमांड मांगी। गुप्ता के एडवोकेट शिरीष श्रीवास्तव ने पक्ष रखते हुए कहा, सुप्रीम कोर्ट की गाइडलाइन है कि जब्ती के लिए पुलिस रिमांड नहीं दी जाएगी। किसी कंसोलेशन स्टेटमेंट के लिए रिमांड नहीं दी जाएगी। वित्त नियंत्रक को नहीं मिली अग्रिम जमानत रिटायर्ड वित्त नियंत्रक ऋषिकेश वर्मा की अग्रिम जमानत याचिका कोर्ट ने खारिज कर दी। उन पर विवि के खाते से 19.48 करोड़ रुपए निजी खाते में ट्रांसफर करने के आरोप हैं।

लुकआउट नोटिस.. नहीं भाग सका विदेश

फरार पूर्व कुलगुरु प्रो. गुप्ता को पुलिस ने रायपुर के डीडी नगर सेक्टर-1 से बुधवार रात 2 बजे गिरफ्तार किया था। वे 8 अप्रेल से रिश्तेदार के फ्लैट में छिपे थे। लोकेशन ट्रेस न हो, इसलिए वे मोबाइल भी नहीं रख रहे थे। हर दो दिन में वे जगह बदल लेते थे। उन्होंने विदेश भागने की भी कोशिश की, पर लुकआउट नोटिस के कारण नहीं भाग सके। गिरफ्तारी के बाद क्राइम ब्रांच उन्हें लेकर गुरुवार रात 10.30 बजे लेकर भोपाल पहुंची।

ये पहले से जेल में

एसआईटी कुमार मयंक, एक्सिस बैंक के ब्रांच मैनेजर रामकुमार रघुवंशी और दलित संघ सोहागपुर के कार्यकारिणी सदस्य सुनील रघुवंशी ।

बोहरा समाज की मस्जिद में मोदी के जयकारे गूंजे

भोपाल। मध्यप्रदेश के भोपाल की बोहरा समाज की अलीगंज हैदरी मस्जिद में 'हर हर मोदी घर घर मोदी' के नारे गूंजे। मस्जिद के अंदर ही समाज के लोगों ने घर घर मोदी के अलावा 'मोदी है तो मुमकिन है' के भी नारे लगाए। बात सिर्फ नारों तक सीमित नहीं रही, बल्कि मस्जिद के अंदर मोदी के पोस्टर लहराए और एकजुट होकर नारा लगाया 'अबकी बार 400 पार'। इस दौरान भाजपा प्रत्याशी आलोक शर्मा भी वहां मौजूद रहे। मस्जिद के आमिल जौहर अली ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दिल खोलकर तारीफ की। उन्होंने कहा कि हमारे वजीरे आलम की हम बहुत कद्र करते हैं। प्रधानमंत्री सैयदना साहब के मुरीद हैं। उनसे हमारे घर जैसे रिश्ते हैं। अल्लाह करे उन्हें कामयाबी मिले। इसके अलावा पीएम के सैयदना साहब से भी बढ़िया रिश्ते हैं।

शिवराज की राजनीति सज्जन दिखने की, भानु को खरीदने का प्रयास-जीतू

बोले- 32 साल एक ही व्यक्ति को मौका, क्षेत्र में विकास नहीं

रायसेन। शिवराज सिंह चौहान खुद को सज्जन इंसान के रूप में प्रस्तुत करने की राजनीति करते हैं, तब उन्होंने दूत भेजकर प्रतापभानु शर्मा को खरीदने की कोशिश की, यह शर्मनाक है। भाजपा में शामिल कराने के लिए आज नेताओं को डराया जा रहा कार्यकर्ताओं को धमकाया जा रहा है, पर हमें जनता पर भरोसा है। यह बात प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने विदिशा से कांग्रेस प्रत्याशी प्रतापभानु शर्मा की शुक्रवार को रायसेन में नामांकन रैजी में कही। जीतू ने कहा कि 32 साल एक व्यक्ति को अवसर मिला, लेकिन क्षेत्र में कोई बड़ा बदलाव नहीं हुआ। बोले, एक कहावत है ऊपर किला, नीचे जिला हमें कुछ नहीं मिला। जीतू ने कहा, वोट मांगने का आधार विकास होना चाहिए। आज इसे समझने की आवश्यकता है कि भाजपा के नेताओं के बच्चों के पास अच्छा खासा रोजगार है, परंतु आपके बच्चों के पास रोजगार क्यों नहीं है।

विंध्य क्षेत्र में बसपा बिगाड़ेगी भाजपा-कांग्रेस का गणित

कई क्षेत्रों में बसपा का है बड़ा जनाधार

भोपाल। लोकसभा चुनाव की तारीखों की घोषणा के बाद मध्य प्रदेश में सियासी हलचल तेज है। भाजपा और कांग्रेस दोनों पार्टियां सियासी दम भर रही हैं। वहीं, विंध्य क्षेत्र में दोनों पार्टियों के सामने एक चुनौती का फिर से सामना करना पड़ सकता है। दरअसल, विंध्य क्षेत्र में चार लोकसभा सीटों पर बहुजन समाज पार्टी का अपना वोट बैंक है। इस पर भाजपा और कांग्रेस सेंध लगाने का प्रयास करती रही है इसके बाद भी यहां की दो लोकसभा सीट में बहुजन समाज पार्टी लोकसभा चुनावों में अबतक चार बार जीत चुकी है। हालांकि बसपा अभी तक उम्मीदवार तय नहीं कर पाई है जिस कारण भाजपा और कांग्रेस की निगाह उस पर टिकी हुई है। इधर, विधानसभा चुनाव में मिले मतों से उत्साहित बसपा लोकसभा चुनाव पूरी दमदारी के साथ लडने के मूड में नजर आ रही है। वैसे भी विंध्य की चार लोकसभा सीटों में से सतना एक और रीवा तीन बार जीत चुकी है, लिहाजा इस बार भी बसपा अपने पुराने इतिहास को दोहराने और सबको चौंकाने के मूड में है।

रीवा-बसपा को पहला सांसद दिया-रीवा संसदीय सीट से कई ऐसे लोग भी सांसद चुने गए जो सामान्य घराने से थे जिनका कोई राजनीतिक बैकग्राउंड नहीं था। उत्तर प्रदेश से सटे रीवा संसदीय सीट में बसपा की सक्रियता 1989 से ही तेज हो गई थी, जिसका लाभ भी पार्टी को 1991 के लोकसभा चुनाव में मिला। 1991 के लोकसभा चुनाव में रीवा संसदीय सीट से बसपा के भीम सिंह पटेल को विजय मिली। भीम सिंह पटेल देश में बसपा के पहले सांसद थे। भीम सिंह पटेल ने पूर्व विधानसभा अध्यक्ष और विंध्य में सफेद शेर के नाम से प्रसिद्ध श्रीनिवास तिवारी को चुनाव हराया था। बसपा वैसे तो रीवा

संसदीय सीट को अब तक तीन बार जीत चुकी है लेकिन दो बार लगातार इस सीट को जीतने का भी मौका पार्टी को मिला है, हर बार प्रत्याशी अलग-अलग रहा। 1991 के अलावा 1996 में बुद्धसेन पटेल एवं 2009 में देवराज पटेल को रीवा से सांसद बनने का मौका मिला है। 1989 से 2019 तक हुए 9 लोकसभा चुनावों में तीन बार बहुजन समाज पार्टी रीवा संसदीय सीट जहां जीत चुकी है वहीं दो बार यह दूसरे नंबर और तीन बार तीसरे नंबर पर रही है। फिलहाल इस संसदीय सीट से दो की ही दावेदारी सामने आई है। त्योंथर विधानसभा सीट से बसपा से किस्मत आजमा चुके देवेन्द्र सिंह एवं सिरमौर विधानसभा सीट से पार्टी के उम्मीदवार रहे वी डी पांडेय का नाम सामने आ रहा है। नवंबर 2023 में हुए विधानसभा चुनाव में देवेंद्र सिंह को त्योंथर विधानसभा में 24 हजार 393 वोट मिले थे तो व्ही डी पांडेय को सिरमौर में 41 हजार 85 मत मिले थे।

सतना-दो पूर्व सीएम को हरा कर सबको चौंकाया-रीवा की तरह ही सतना संसदीय सीट में भी बसपा ने चौंकाने वाले रिजल्ट दिए। 28 साल पहले लोकसभा चुनाव में बसपा प्रत्याशी ने मध्यप्रदेश को दो पूर्व मुख्यमंत्री को हरा दिया था। आंकड़ो की बात करें तो 1989 से लेकर 2019 तक 9 बार मैदान में पार्टी अपना प्रत्याशी उतार चुकी है लेकिन जीत एक बार ही मिली। हालांकि यह पार्टी का तीसरा प्रयास था। वर्ष 1996 में बसपा ने सुखलाल कुशवाहा को मैदान में उतारा था उस समय भाजपा की ओर से पूर्व मुख्यमंत्री वीरेंद्र कुमार सखलेचा और कांग्रेस से टूट कर बनी तिवारी कांग्रेस से पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन सिंह ने चुनाव लड़ा था। इसके बाद भी सुखलाल बाजी मार ले गए। तब बसपा प्रत्याशी को 1 लाख 82 हजार 4 सौ 97, भाजपा प्रत्याशी वीरेंद्र कुमार सखलेचा को 1 लाख 60 हजार 2 सौ 59 और तिवारी कांग्रेस के अर्जुन सिंह को 1 लाख 25 हजार 6 सौ 53 मत मिले थे। हालांकि पार्टी ने सुखलाल को 5 बार टिकट दी थी लेकिन वह एक ही बार ही जीत पाए थे। बसपा ने 1989 में श्याम सुंदर, 1991 से 1999 तक सुखलाल, 2004 में नरेन्द्र सिंह, 2009 में फिर सुखलाल कुशवाहा, 2014 में धर्मेंद्र सिंह तिवारी और 2019 में अच्छेलाल कुशवाहा को टिकट दी थी। इधर दावेदारी में तीन के नाम सामने आ रहे हैं जिसमें रत्नाकर चतुर्वेदी शिवा, मणिराज सिंह पटेल एवं अच्छेलाल कुशवाहा का नाम शामिल हैं। आंकड़ों के मुताबिक बसपा की टिकट पर सतना विधानसभा से चुनाव लड़ चुके रत्नाकर को 33 हजार 567, रामपुर बाघेलान विधानसभा से बसपा के उम्मीदवार रहे मणिराज सिंह पटेल को 38 हजार 113 मत मिले थे। जबकि 2019 में लोकसभा चुनाव लड़ चुके अच्छेलाल कुशवाहा को 1 लाख 9 हजार 961 मत मिले थे। टिकट के लिए इनका भी दावा मजबूत माना जा रहा है।

सीधी- सिर्फ उम्मीदवार उतारती रही बहुजन समाज पार्टी

विंध्य की तीसरी लोकसभा सीट सीधी की बात करें तो यहां बहुजन समाज पार्टी 1989 से 2019 तक 9 लोकसभा चुनाव लड़ चुकी है, लेकिन हर बार पार्टी को निराशा ही हाथ लगी है। कुल मिलाकर सीधी लोकसभा सीट में बसपा अभी तक सिर्फ अपने उम्मीदवार ही उतारते आई है। इस सीट पर चार-चार बार बसपा को तीसरा और चौथा स्थान मिला है तो एक चुनाव में तो पार्टी पांचवें स्थान पर रही है। पार्टी ने 1989 में दान सिंह, 1991 में दान सिंह पवेल, 1996 में फुंदेलाल सिंह, 1998 में दान सिंह पवेल, 1999 में जुगलाल कोल, 2004 में रामलाल, 2009 में मनोहर सिंह मरावी, 2014 में फूल सिंह परस्ते और 2019 में मोहदल सिंह पाव को मैदान में उतार चुकी है।

शहडोल- आरक्षित सीट पर केवल प्रत्याशी खड़े किए

विंध्य की सतना- रीवा लोकसभा सीट में भले ही बसपा को जीत का मौका मिला हो लेकिन विंध्य की एसटी के लिए आरक्षित शहडोल संसदीय सीट में बसपा का प्रदर्शन कुछ खास नहीं रहा है। यहां बहुजन समाज पार्टी कुछ चुनावों में तो नोटा और गोड़वाना गणतंत्र पार्टी से भी पीछे रही है। 1989 से 2019 तक हुए 9 लोकसभा चुनावों में बहुजन समाज पार्टी तीन बार चौथे स्थान पर, पांच बार तीसरे स्थान पर और एक बार सातवें स्थान पर रही है। 1989 में लक्ष्मण सिंह, 1991 में महाबीर सिंह, 1996 में बसंती देवी, 1998 में बसंती देवी 1999 में बसंती देवी, 2004 में हरिकृष्ण प्रसाद, 2009 में अशोक कुमार शाह, 2014 में रमाशंकर शहवाल और 2019 में रामलाल पनिका को पार्टी ने मौका दिया था।

भाजपा जातिवार गणना के विरोध में नहीं-नड्डा

सभा कांग्रेस पर लगाया समाज को जातियों में बांटने का आरोप

जबलपुर। *भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने मप्र के छिंदवाड़ा व सीधी में चुनावी जनसभाओं को संबोधित करते हुए कहा कि विपक्षी दलों के गठबंधन आइएनडीआइए के लोग जातिवार गणना की बात करते हैं। भाजपा इसके विरोध में नहीं है, लेकिन कांग्रेस समाज को जातियों में बांटना चाहती है, इसलिए इसका हम विरोध करते हैं।*

नड्डा ने कहा कि एक देश में दो निशान, दो विधान नही चलेंगे, ये नारा पहले लगता था, लेकिन पीएम ने धारा 370 को धराशायी कर दिया। वन रैंक वन पेंशन की मांग पीएम ने पूरी की। 2014 से पहले भारत पिछलग्गू देश के रूप में जाना जाता था। अब देश बदल चुका है। 2019 में 11वे नंबर की अर्थव्यवस्था अब ब्रिटेन को पछाड़कर पांचवें नंबर पर है। भारत 2027 में तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनेगा। उन्होंने विपक्ष के गठबंधन और परिवारवाद पर निशाना साधा। कहा कि दिल्ली में बैठे परिवार के माता, बेटा और बेटी को भारत का मन क्या समझ में आएगा। वह हारी हुई लड़ाई लड़ रहे हैं। मोदी जी को गालियां बकते हैं, जेल में भेजने की बात करते हैं। इन्हें नहीं पता है कि मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री रहते हुए मोदी पर एक दाग

नहीं है। एक कहावत है एक तरह के पंख वाले एक साथ हैं।

बदल गया है जमाना बदल डालो छिंदवाड़ा

पूर्व मुख्यमंत्री कमल नाथ पर निशाना साधते हुए नड्डा ने सभा में लोगों से सवाल किया- आप बताइए कमल नाथ और बेटा, परिवार की पार्टी है या नहीं? ऐसे परिवार की पार्टियों को घर बैठाना है ? छिंदवाड़ा में बदलाव लाना है? बोले- बदल गया है जमाना, बदल डालो छिंदवाड़ा। यह हारी हुई लड़ाई लड़ रहे हैं। जनसभाओं में मुख्यमंत्री मोहन ज़ यादव, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा, उप-मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल, कैबिनेट मंत्री कैलाश विजयवर्गीय भी मौजूद रहे।

अब 340 डिप्टी रेंजरों को भी देना होगी कार्यवाहक रेंजर पद पर पदोन्नति

भोपाल। उच्च न्यायालय जबलपुर ने अपर मुख्य सचिव वन विभाग एवं सचिव सामान्य प्रशासन विभाग मंत्रालय को निर्देश जारी करते हुए कहा है आदेश की प्रामाणित प्रति प्राप्त होने के 30 दिवस के अंदर नियमानुसार कार्यवाहक पदोन्नति को लेकर बनाये गए मानदण्डों के अनुसार शेष डिप्टी रेंजरों की कार्यवाहक रेंजरों के पदोन्नति देते हुए उनकी सूची जारी करें।

मप्र कर्मचारी कांग्रेस संगठन के प्रांताध्यक्ष मुनेंद्र सिंह परिहार द्वारा उप वनक्षेत्रपालों की कार्यवाहक पदोन्नति को लेकर दायर याचिका में हाईकोर्ट जबलपुर के न्यायमूर्ति विवेक अग्रवाल ने यह फैसला सुनाया। इस संबंध में कार्यकारी प्रांताध्यक्ष एसपी राय बताया कि डिप्टी रेंजरों को रेंजर्स के रिक्त पदों पर उच्चतर पद का प्रभार दिलाये जाने हेतु संगठन के प्रांताध्यक्ष मुनेंद्र सिंह परिहार द्वारा मप्र उच्च न्यायालय जबलपुर में याचिका (क्रमांक-5018) 26 फरवरी 24 को दायर की गई थी।

मोदी के परिवार में युवा, आदिवासी नहीं, गिने-चुने पूंजीपतिः श्रीनिवास

भोपाल। कांग्रेस के प्रदेश मुख्यालय परिसर में शुक्रवार को युवा कांग्रेस के नए प्रदेश अध्यक्ष मितेंद्र सिंह को पदभार ग्रहण कराने पहुंचे संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीनिवास बीवी ने भाजपा की केंद्र और प्रदेश सरकार पर जमकर निशाना साधा। मितेंद्र के पदभार ग्रहण समारोह में युवा कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए श्रीनिवास ने कहा कि मोदी परिवार में देश के युवा और आदिवासी नहीं बल्कि गिने-चुने पूंजीपति हैं। कांग्रेस की लड़ाई लोकतंत्र और संविधान को बचाने की है। भाजपा मोदी गारंटी की बात करती है तो लोगों से जाकर पूछो कि क्या नौकरी मिली, किसानों की आय दोगुनी हुई, 15 लाख रुपये खातों में आए, महिलाओं को तीन हजार रुपये प्रतिमाह मिलने लगे या फिर किसानों को धान और गेहूं का समर्थन मूल्य बढ़कर मिलने लगा। ये सब जुमले थे जो लोगों को भ्रमित करने के लिए दिए गए। भाजपा को इस चुनाव में 180 सीटें भी नहीं मिलेंगी। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने कहा कि पार्टी युवाओं को आगे बढ़ाने का काम कर रही है। नए चेहरों को चुनाव में मौका दिया गया है। ये चुनाव देश के भविष्य का चुनाव है। युवा कांग्रेस के कार्यकर्ता घर-घर जाएं और भाजपा सरकार की वादाखिलाफी, इलेक्ट्रोरल बांड के माध्यम से हुई लूट के बारे में बताएं। इस अवसर पर राज्य सभा सदस्य विवेक तन्खा, विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार, उप नेता हेमंत कटारे, पूर्व प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अरुण यादव समेत वरिष्ठ नेता उपस्थित थे। मितेंद्र ने सबका आभार जताया।

कांग्रेस प्रत्याशी को चुनाव न लड़ने के लिए भाजपा ने दिया था आफर-प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने कहा कि भाजपा चुनाव जीतने के लिए हथकंडे अपना रही है। भाजपा की ओर से विदिशा-रायसेन संसदीय क्षेत्र के कांग्रेस प्रत्याशी प्रतापभानु शर्मा को चुनाव नहीं लड़ने के लिए आफर दिया गया था। पटवारी यहां कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे।

रामनवमी विशेष

श्रीराम ईश्वरीय अवतार हैं या कोई महामानव, इस संदर्भ में लोगों विचारों में मतभेद हो सकते हैं। लेकिन इस बारे में कोई दो मत नहीं है कि उन्होंने मर्यादा, संस्कारों और मानवीय मूल्यों के जो आदर्श सदियों पहले स्थापित किए, वे आज भी प्रासंगिक हैं। आइए, उनके जन्मोत्सव के पावन अवसर पर हम सब श्रीराम के चरित्र से प्रेरणा लेकर बेहतर मनुष्य बनने की ओर अग्रसर हों।

मर्यादा-मूल्यों के आदर्श पुरुषोत्तम श्रीराम

पराक्रमी पुत्र, पितृ आज्ञा के पालक, दुष्टहंता, शोषितों और पीड़ितों के रक्षक, नारी का सम्मान करने और उनकी रक्षा करने वाले नायक, अपनी प्रजा के भावों को समझने, उन्हें महत्ता देने वाले और अपने न्याय के बल पर रामराज को अक्षुण्ण बनाने वाले राजा थे। उन्होंने बतौर पुत्र, भाई, शिष्य, मित्र, पति और राजा ऐसे आदर्श मूल्य स्थापित किए, जिसके समान कोई अन्य उदाहरण नहीं दिखता है। यही वजह है कि सहस्त्रों वर्ष गुजर जाने के बाद भी श्रीराम के प्रति सम्मान और आस्था का भाव जनमानस में तनिक भी कम नहीं हुआ है। कहना गलत न होगा कि राम का मर्यादा पुरुषोत्तम स्वरूप कालातीत है।

संस्कृति-मूल्यों के प्रतीक पुरुष

आज भी राम का नाम भारतीय संस्कृति, सभ्यता, संस्कारों और मूल्यों का प्रतीक माना जाता है। इसी से प्रेरित होकर आज भी जनसामान्य 'रामराज' की कामना करता है। आज भी राम आदर्श भारतीय समाज के प्रतीक पुरुष हैं। समाज उनमें एक मर्यादा पुरुषोत्तम शासक, लोकरंजक जनकल्याणकारी महान राजा के दर्शन करता है।

करुणावान स्वरूप

पुराणों, मिथकों के अनुसार श्रीराम भगवान विष्णु के पूर्ण अवतार हैं तो व्यवहारवादियों की नजर में वे एक सर्वगुणसंपन्न आदर्श महामानव हैं। लेकिन हर रूप में वे एक आदर्श जननायक तो हैं ही। 'रामायण' और 'रामचरितमानस' महाकाव्यों में वर्णन किया गया है कि श्रीराम अहिल्या, केवट, शबरी, सुग्रीव, जटायु और विभीषण जैसे समाज के हर वर्ग के लोगों के प्रति समभाव ही नहीं वरन करुणा का भाव भी रखते हैं। तभी तो पक्षीराज जटायु का अंतिम संस्कार स्वयं करते हैं। शबरी के जूठे बेर भी प्रेमपूर्वक ग्रहण करते हैं। राक्षस जाति के विभीषण और वानर जाति के सुग्रीव को अपना मित्र बनाते हैं। संकटग्रस्त की हर संभव मदद के लिए सर्वदा तैयार रहते हैं। वे जन-जन के शाप, ताप, शोक, भय और हर संताप हरते हैं। इस कथा के अनुसार माना तो यह भी जाता है कि जो भी जाने या अनजाने में श्रीराम की शरण में जाता है, उसे मोक्ष प्राप्त होता है।

सत्यरक्षक-पराक्रमी-दुष्टहंता

श्रीराम की गुरु भक्ति और समर्पण अद्भुत है। गुरु की आज्ञा पालन वे पूरे समर्पण के साथ करते हैं। यदि वशिष्ठ से वे बचपन में शिक्षा और शास्त्रज्ञान लेते हैं तो विश्वामित्र से वे अल्प समय में ही शस्त्र विद्या न केवल सीख लेते हैं अपितु उसमें इतने पारंगत हो जाते हैं कि उसका उपयोग करके मायावी राक्षसों ताड़का और सुबाहु जैसे आततायियों का नाश कर डालते हैं। श्रीराम दुर्बलों को सताने, मारने तथा उनका शोषण करने वालों को पहले तो सत्पथ पर लाने का प्रयास करते हैं पर, जब ऐसे लोग अत्याचार की सीमा पार करने लगते हैं तब राम दुष्टहंता बन जाते हैं। दूसरों की ताकत को ही अपनी ताकत बना प्रयोग करने वाले दुराचारी बाली का वध करने से परहेज नहीं करते हैं। स्त्री उद्धारक होने के बावजूद, वे स्त्री जाति को बदनाम करने वाली ताड़का और लंकिनी का वध भी करते हैं यानी श्रीराम के लिए न्याय सर्वोपरि हैं।

सब जग चाहे राजा राम

श्रीराम अपने दौर में जाति-पाति तथा ऊंच-नीच से मुक्त राजा हुए हैं। राजा के रूप में राम एक आदर्श स्थापित करते है। वे अपने राज्य की ऐसी व्यवस्था करते हैं कि रामराज्य आने वाले युगों के लिए भी एक आदर्श राज्य बन जाता है। राम स्वयं सादा जीवन उच्च विचार का पालन करते हैं पर अपनी प्रजा को सारी सुविधाएं और सुख देने में कोई कमी नहीं करते। एक समतामूलक, न्यायसंगत समाज की स्थापना करते हैं। छोटे-छोटे संसाधनों का सही उपयोग सीखना हो तो राम आज भी एक आदर्श प्रबंधक दिखते हैं। राम ऐसे दक्ष सेनानायक हैं कि दिव्य अस्त्र, शस्त्रों से युक्त महाबली रावण, उसके मायावी पुत्रों, राक्षसों और लंका की सेना को, महज बंदर, भालुओं की मदद से परास्त कर देते हैं। यही वजह है कि आज भी आमजन अपने शासकों में राम की छवि ढूंढ़ता है और रामराज की कामना करता है।

सारांश यही है कि राम दिव्य महापुरुष, आदर्श राजा और मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में जन-जन के हृदय में सदियों से विराजमान हैं। राम के चरित्र, कार्यों तथा व्यवहार से युगों-युगों से प्रेरणा ली जा रही है और आगे भी ली जाती रहेगी। *

मात्र दो अक्षर के नाम 'राम' की असीम महिमा सारी दुनिया में व्याप्त है। केवल भारत और हिंदू धर्म में ही नहीं अपितु विश्व के कोने-कोने में राम के नाम की महिमा का गुणगान अलग रूपों या तरीकों से सदियों से होता आ रहा है। राम, जीवन के हर क्षेत्र में समाए हैं। धर्म, दर्शन, अध्यात्म, साहित्य, राजनीति यानी जीवन-समाज का लगभग हर अंश 'राममय' है। विशेष रूप से भारतीय जनमानस में राम एक ऐसी गहन आस्था का नाम है, जो 'राम नाम जगत आधारा' के भाव में व्यक्त होती है।

तर्क से परे है आस्था

प्रत्येक वर्ष चैत्र शुक्ल नवमी को आस्थामयी होकर जनसमुदाय श्रीराम का जन्मोत्सव मनाता है। श्रद्धावान राम भक्तों के लिए रामनवमी का यह पर्व, उल्लास, उमंग और अपने आराध्य के महिमामंडन का उत्सव बनकर आता है। राम भक्तों के मन में किसी भी तर्क से ऊपर एक अटूट आस्था वास करती है। राम में उन्हे भगवान के दर्शन होते हैं, मोक्षदायी वैकुंठशायी विष्णु के अवतार दिखते हैं, मर्यादाओं के पुनर्स्थापन की एक दिव्य आशा की किरण नजर आती है। यही वजह है कि श्रीराम को घर-घर पूजा जाता है।

जन्म से जुड़ी पौराणिक मान्यता

भले ही दशरथ पुत्र राम के जन्म और उनके काल निर्धारण पर विद्वान एकमत न हों पर 'सुखसागर' जैसे प्राचीन ग्रंथों में राम का जन्म त्रेता युग में होना माना गया है। उसके अनुसार कलियुग की अवधि 4,32,000 वर्ष है, जो सबसे छोटा युग है। द्वापर उससे दोगुना और त्रेता उससे भी दोगुना मानते हैं। इस तरह राम आज से कम से कम 12 से 14 लाख वर्ष पूर्व अवतरित हुए थे। मिथकों और कालगणना के हिसाब से चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी राम की जन्म तिथि मानी गई है।

कालातीत मर्यादा पुरुषोत्तम

पौराणिक वर्णन के अनुसार मर्यादा पुरुषोत्तम कहे जाने वाले राम, अपने समय के एक राज्य अयोध्या के राजा दशरथ के

साहित्य के आदर्श नायक

साहित्य में भी श्रीराम का अनुपम वर्णन मिलता है। राम, संत कबीर के लिए निराकार हैं तो भक्त कवि गोस्वामी तुलसीदास के लिए साकार हैं। वाल्मीकि की प्रेरणा हैं राम तो महाकवि भास और कंबन के कृतिनायक हैं राम। राम के बिना केशव के साहित्य की कोई महत्ता नहीं बचती है। निराला 'राम की शक्ति पूजा' और मैथिली शरण गुप्त अपने महाकाव्य 'साकेत' के माध्यम से आधुनिक युग में राम की प्रासंगिकता को रेखांकित करते हुए उन्हे आधुनिक दौर में भी प्रेरक मानते हैं। *

Eating Zone

पूरे दिन बैठे रहना, धूम्रपान, नियमित शराब का सेवन, अस्वास्थ्यकर भोजन, बिना समय के भोजन और अधिक मात्रा में भोजन करना आपके लिए नुकसानदायक है। ये आदतें हैं जो नियमित रूप से व्यायाम करने के बावजूद आपकी फिटनेस को खराब कर सकती हैं।

एक्सरसाइज के बाद भी करें ये काम...

भोजन को ध्यान से करें

आप क्या खाते हैं इस पर नजर रखने के अलावा, आपके खाने के पैटर्न पर भी ध्यान देना जरूरी है। ओवरईटिंग से परहेज, बिना विचलित हुए भोजन करना, मन से खाने की कुछ आदतें हैं जो जिम में व्यायाम करने के अलावा आपकी फिटनेस में सुधार कर सकती हैं।

क्या आप जानते हैं कि हर दिन केवल एक घंटे के लिए एक्सरसाइज करना आपको फिट रहने के लिए पर्याप्त नहीं है। संपूर्ण स्वास्थ्य के लिए आपको अपने पूरे दिन की शारीरिक गतिविधि में सुधार करने की आवश्यकता है।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मानना है कि चाहे आप एक या दो घंटे के लिए जिम में कितना भी वर्कआउट कर लें, लेकिन अगर आप दिन भर आराम से रहते हैं या गतिहीन जीवन शैली जीते हैं, तो इससे आपके फिटनेस लेवल में सुधार नहीं होगा।

पूरे दिन बैठे रहना, धूम्रपान, नियमित शराब का सेवन, अस्वास्थ्यकर भोजन, बिना समय के भोजन और अधिक मात्रा में भोजन करना आपके लिए नुकसानदायक है। ये आदतें हैं जो नियमित रूप से व्यायाम करने के बावजूद आपकी फिटनेस को खराब कर सकती हैं।

ज्यादा देर तक बैठे न रहें

लंबे समय तक बैठे रहना एक वैश्विक स्वास्थ्य समस्या बनती जा रही है, जिसका आज हम में से कई सामना कर रहे हैं। लेकिन चिंता करने की जरूरत नहीं है क्योंकि कुछ उपाय है जो आपको लंबे समय तक बैठने के दुष्प्रभावों से बचने के लिए कर सकते हैं। न्यूट्रिशनिस्ट के अनुसार बैठने के हर 30 मिनट के लिए आपको अपने दोनों पैरों पर सीधे खड़े होना चाहिए। आप इसे अपने डेस्क पर कर सकते हैं, या आप थोड़ी देर के लिए कही जा सकते हैं। यह लंबे समय तक बैठने से बचने और पूरे दिन सक्रिय रहने का एक प्रभावी तरीका है।

लिफ्ट की बजाय सीढ़ियों का प्रयोग करें

शारीरिक रूप से सक्रिय और फिट रहने के लिए आपको दिन में कम से कम एक बार में चार मंजिला इमारतों पर चढ़ना चाहिए और अगर चार मंजिलें नहीं हैं, तो आपको सीढ़ियों पर चढ़ने का मौका नहीं गवाना चाहिए जो वास्तव में एक प्रभावी कार्डियो एक्सरसाइज है। हो सके तो लिफ्ट और एस्केलेटर से दूर रहें। ऐसा करने से वजन घटाने में मदद मिलती है और आपकी फिटनेस में सुधार होता है।

जंक फूड के अत्यधिक सेवन से बचें

जंक फूड का सेवन विशेष रूप से लंच के लिए सबसे खराब चीज है। क्योंकि लंच से आप अपने स्वास्थ्य, फिटनेस और वजन घटाने के लिए कर सकते हैं। यदि आप नियमित रूप से व्यायाम करने के अलावा फिट रहना चाहते हैं, तो जंक, डीप फ्राइड, शुगर, प्रोसेस्ड और पैकेज्ड फूड को पूरी तरह से अपनी लिस्ट से बाहर कर दें।

आपने पूरे दिन कितने कदम चले ये ट्रैक करें

हर दिन 10,000 कदम पूरे करना एक ऐसा काम है जिसे आपको पूरा करना चाहिए। एक दिन में दस हजार कदम मानव शरीर की बुनियादी आवश्यकता है जो हर दिन की जरूरत और फिटनेस को बनाए रखते हैं। एक दिन में 10,000 कदम चलना एक कसरत के बराबर नहीं माना जा सकता है लेकिन निश्चित रूप से यह एक कार्य है जिसे आपको हर दिन पूरा करने का लक्ष्य रखना चाहिए।

कलेक्टर इन एक्शन मोड, 5 पटवारी और 1 आरआई को किया निलंबित

राजस्व मामलों में लापरवाही की शिकायतों के बाद कार्रवाई, अभी कुछ और नाम!

इंदौर। *लापरवाही और राजस्व मामले महीनों तक पेंडिंग रखना जिले के पांच पटवारी को भारी पड़ गया। कलेक्टर आशीष सिंह तुरंत एक्शन लेते हुए 5 पटवारी को निलंबित कर दिया। राजस्व बोर्ड की रिपोर्ट के आधार पर कलेक्टर आशीष सिंह ने 5 पटवारियों और एक आरआई (राजस्व निरीक्षक) को निलंबित किया है। बताया जा रहा है कि उनके खिलाफ लंबे समय से शिकायतें मिल रही थी इस पर भी एक्शन लिया गया है। सूत्रों की मानें तो अभी कुछ और पटवारियों और आरआई के खिलाफ कार्रवाई होना है। पिछले दिनों मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एक सार्वजनिक मंच से कहा था कि पटवारी कई बार कलेक्टर के भी बाप बन जाते हैं।*

जानकारी अनुसार पटवारियों के बारे में जमीनों के गोलमाल, लोगों की बातों को नहीं सुनना, गलत रिपोर्ट देने और आर्थिक समृद्धता की शिकायत अकसर की जाती रही है। लेकिन, अब मुख्यमंत्री के इशारे को समझ कर कलेक्टर ने पूरे राजस्व अमले को कसना शुरू कर दिया। जानकारी के मुताबिक, इंदौर.राजस्व प्रकरणों के निराकरण में अनावश्यक देरी और भ्रष्टाचार की शिकायतों के बाद कलेक्टर ने तत्काल प्रभाव से निलंबन की यह कार्यवाही की। उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि अभी जांच के दायरे में और भी हैं। समय है सुधर जाएं, वरना कार्रवाई के लिए तैयार रहें।

मुख्यमंत्री बनने के बाद से ही डॉ मोहन यादव राजस्व अमले की नीयत पर सवाल उठाते आए हैं। पिछले दिनों तो उन्होंने कहा था कि नामांतरण, सीमांकन व बटांकन कराने जाओ तो पटवारी कलेक्टर का बाप बन जाता है। इंदौर में पोस्टिंग के साथ ही कलेक्टर आशीष सिंह ने राजस्व अमले में कसावट शुरू कर दी थी। शिकायतों व जांच के बाद कलेक्टर ने शनिवार को मुख्यालय के आरआई सुबोध टेनी और पांच पटवारियों को निलंबित कर दिया। इनमें से दो मल्हारगंज के हैं। बिचौली हप्सी, जूनी इंदौर और राऊ के पटवारी भी निलंबन की सूची में है। इसमें बड़ा नाम सुबोध टैनी का है जो बरसो से ही राजनीतिक-जमींदारी सहयोग से इंदौर में ही जमे हैं। कलेक्टर ने कहा कि अनावश्यक प्रकरण में देर करके लोगों पर दबाव बनाने का खेल अब नहीं चलेगा। जिसे काम करना है ईमानदारी से करे। वरना निलंबन के लिए तैयार रहे।

ये लिखा निलंबन आदेश में- रोशिता तिवारी को जारी निलंबन पत्र में कलेक्टर ने लिखा कि आपके द्वारा राजस्व कार्यों में लापरवाही और अनैतिक कारणों से अनावश्यक कार्य को रोका गया। जिससे सरकारी महत्वपूर्ण काम समय पर नहीं हो पाए। अपने अपने कर्तव्यों में लापरवाही की, जो मप्र सिविल सेवा आचरण नियमों के अंतर्गत कदाचरण की श्रेणी में आता है। इसीलिए आपको मप्र सिविल सेवा नियम-1966 के नियम-9 के तहत तत्काल प्रभाव से निलंबित किया जाता है। निलंबन अवधि में जीवन निर्वाह भत्ता मिलता रहेगा। निलंबन अवधि में आपका मुख्यालय भू-अभिलेख जिला इंदौर रहेगा।

अंगद के पैर की तरह जमें है टैनी-सुबोध टेनी आरआई हैं और बिचौली हप्सी में पदस्थ हैं। टेनी को इंदौर राजस्व अमले में अंगद का पैर कहा जाता है, जिसे कोई नहीं हिला पाया। इसके पीछे टेनी की राजनीतिक पकड़ है। जो उन्होंने सेवा शुल्क लेकर लोगों को फायदा देकर मजबूत की है। जब मनीष सिंह कलेक्टर थे, तब उन्होंने टैनी का ट्रांसफर मानपुर कर दिया था। लेकिन, उनके जाते ही टैनी फिर मानपुर से बिचौली हप्सी आ गए। कहा जाता है कि इंदौर के वजनदार जमींदारों के काम कलेक्ट्रेट में टेनी ही निपटाते हैं।

30 से अधिक महिलाओ के प्रश्नों के संतोष जनक जवाब दिए लालवानी ने

इंदौर। इंदौर प्रेस क्लब मे विभिन्न सामाजिक संस्थाओ से जुड़ी महिलाएं बड़ी संख्या में एकत्रित हुई। यह आयोजन किया वरिष्ठ समाजसेविका अलका सैनी के सयोजन मे । इस मौके पर विभिन्न क्षेत्रों से 30 से अधिक महिलाओ ने शिक्षा, स्वास्थ्य, साहित्य,प्रबंध, पेंशन, कला,ग्रामीण विकास, विधि आदि से जुड़े विषयों पर सांसद शंकर लालवानी से प्रशन पूछे। । मंच पर लालवानी के साथ मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय इंदौर हाई कोर्ट की उपमहाधिवक्ता अर्चना खेर, सीनियर आर्टिस्ट शुभा वैध, पूर्व महापोर डॉ.उमाशशि शर्मा, डॉ.विनीता कोठारी एवं साहित्यकार ज्योति जैन विशेष रूप से उपस्थित थी।

प्रश्न, अनुप्रिया देवताले, इंदौर में शास्त्रीय वाध्य संगीत को बढ़ावा देने के लिए भी कुछ करने की जरूरत है के जवाब में लालवानी ने कहा इंदौर में अमीर खा संगीत समारोह हो रहा है। बड़े आयोजन के लिए और अच्छे आडियंस चाहिए। इसके अलावा डॉ. हीना नीमा ने सभी को मुफ्त शिक्षा और मुफ्त स्वास्थ मिलना चाहिए, गीतांजलि चंद्रा, गीता कुशवाह, आरती माहेश्वरी, शीतल अत्रे, नवनीता किस्टे , डॉ. रजनी भंडारी, अमर कोर चड्ढा, दीपा व्यास ने भी लालवानी से प्रश्न किये , जिनके उन्होंने संतोषजनक जवाब दिये।

शहर में 6ठे दिन भी नहीं चले नल, लोग होते रहे पानी के लिए परेशान

इंदौर। पश्चिम क्षेत्र 6ठे दिन रविवार को भी नलों से नर्मदा का पानी वितरित नहीं किया गया। इसे मिलाकर लगातार 6 दिन हो चुके हैं जब नलों से पानी नहीं दिया जा रहा है। निगम अधिकारियों का कहना है कि पाइप लाइन फूट जाने के कारण नलों में पानी नहीं दिया जा रहा है। हालांकि पाइप लाइन 6 दिन पहले फूटी थी तो क्या अब तक इसका मेंटेनेंस नहीं किया गया। रहवासियों को आसपास के बोरिंग या अन्य स्थानों से पानी की व्यवस्था करना पड़ रही है। लोग दिन भर पानी की व्यवस्था में ही देखे जा सकते हैं। नगर निगम अधिकारी वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में टैंकरों से भी अपनी वितरित नहीं कर रहे हैं। वैसे ही शहर में एक दिन छोड़कर दूसरे दिन नलों से नर्मदा और अन्य स्रोतों का पानी प्रदान किया जाता है। लोगों को पहले ही दो दिन के पानी की व्यवस्था करके रखना पड़ती है। ऐसे में यदि एक दिन भी नलों से पानी नहीं आए तो सीधे चार दिन की गैप हो जाती है। वही रहवासियों को 15 दिन पानी के बदले बिल का भुगतान पूरे महीने अर्थात 30 दिन का करना पड़ रहा है।

जानकारी अनुसार 6 दिनों से पश्चिम क्षेत्र में जल संकट की स्थिति है। आज भी अन्नपूर्णा, द्रविड़ नगर सहित अन्य टंकियां से पानी नहीं बनता गया। नलों के माध्यम से दिया जाने वाला नर्मदा का पानी वितरित नहीं किया जा रहा है। हालांकि गर्मी शुरू होते ही हर वर्ष नगर निगम अधिकारी ने नलों से कम पानी देना शुरू कर देते हैं। शहर में 20 वर्षों से भी अधिक से एक दिन छोड़कर दूसरे दिन नलों के माध्यम से नर्मदा और अन्य स्रोतों का पानी वितरित किया जा रहा है। इसके लिए शहर को पूर्वी झोन और पश्चिमी झोन दो हिस्सों में बांटा गया है। एक दिन पश्चिम क्षेत्र में तो अगले दिन पूर्वी क्षेत्र में जलप्रदाय किया जाता है। ऐसे में पहले ही लोगों को पानी की व्यवस्था दो दिन के लिए करना पड़ती है। उसके बाद अभी से ही गर्मियों में नलों से दिए जाने वाला पानी और कम कर दिया है। यह हर वर्ष की व्यवस्था है या कहें किया जाता है। इसके पीछे निगम अधिकारियों का कोई न कोई बहाना हर वर्ष होता है। इस वर्ष भी अभी गर्मी पूरी तरह शुरू भी नहीं हुई है और नलों में दिया जाने वाला पानी कम कर दिया गया है।

टैंकरों से पानी बांटने में होती है मोटी कमाई

हर वर्ष गर्मियों के मौसम में टैंकरों से पानी बंटवाया जाता है। इन टैंकरों को प्रतिदिन किराये के अलावा डीजल भी निगम द्वारा ही दिया जाता है। यह टैंकर चलवाने के पीछे नगर निगम के अधिकारी और जल यंत्रालय के अधिकारियों की गहरी चाल होती है। इन टैंकरों के माध्यम से ही इन अधिकारियों को तगड़ी और अतिरिक्त कमाई भी होती है। न सिर्फ पानी बेचने बल्कि टैंकरों को दिए जाने वाले डीजल में भी भारी मात्रा में चोरी करने के मामले भी सामने आ चुके हैं। साथ ही न सिर्फ निगम अधिकारियों बल्कि कॉलोनी-मोहल्ला के छुटभैये नेताओं की भी इन टैंकरों के माध्यम से चांदी हो जाती है।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी जयश्री जैन द्वारा अपनी दुनिया प्रिंटर्स 13, प्रेस कॉम्प्लेक्स ए.बी. रोड इंदौर से मुद्रित एवं 22, प्रेस काम्पलेक्स, प्रेस हाऊस, ए.बी. रोड इंदौर 452008 से प्रकाशित। प्रधान संपादक- डॉ. राजेश जैन, मो. 9425322301 (डाक पंजीयन MP/IDC/1462/2016-2019)